साहित्योत्सव
Festival of Letters
24 - 29 फ़रवरी 2020

दैनिक समाचार बुलेटिन
बुधवार, 26 फ़रवरी 2020

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2019 अर्पण समारोह संपन्न

साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित साहित्योत्सव के दूसरे दिन 2019 के साहित्य अकादेमी पुरस्कार कमानी सभागार में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार द्वारा प्रदान किए गए। प्रतिष्ठित कवि, कथाकार एवं फ़िल्म निर्देशक गुलज़ार इस समारोह के मुख्य अतिथि थे।

पुरस्कार प्राप्त करने वाले लेखकों के नाम हैं- जयश्री गोस्वामी महंत (असमिया), चिन्मय गुहा (बाङ्ला), फुकन च. बसुमतारी (बोडो), (स्व.) ओम शर्मा 'जंद्रयाड़ी' (डोगरी), शशि थरूर (अंग्रेज़ी), रतिलाल बोरीसागर (गुजराती), नन्दकिशोर आचार्य (हिंदी), विजया (कन्नड), अब्दुल अहद हाजिनी (कश्मीरी), निलबा अ. खांडेकर (कोंकणी), कुमार मनीष अरविन्द (मैथिली), वि. मधुसूदनन् नायर (मलयाळम्), बेरिल थांगा (मणिपुरी), अनुराधा पाटील (मराठी), सलोन कार्थक (नेपाली), तरुणकान्ति मिश्र (ओड़िआ), किरपाल कज़ाक (पंजाबी), रामस्वरूप किसान (राजस्थानी), पेन्ना मधुसूदन (संस्कृत), कालीचरण हेम्ब्रम (संताली), ईश्वर मूरजाणी (सिंधी), चो. धर्मन (तमिळ), बंडि नारायण स्वामी (तेलुगु) एवं शाफ़े क़िदवई (उर्दू)। डोगरी में पुरस्कृत (स्व.) ओम शर्मा 'जंद्रयाड़ी' (डोगरी) का पुरस्कार उनके पुत्र ने प्राप्त किया। सभी रचनाकारों को सम्मान स्वरूप उत्कीर्ण ताम्रफलक और एक लाख रुपए की राशि का चेक प्रदान किया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि गुलज़ार ने अपने वक्तव्य में कहा कि साहित्य अकादेमी ने अपने आरंभ से ही अपनी स्वायत्तता बनाए रखी है और उम्मीद की जा सकती है कि ये आने वाले समय में बनी रहेगी। लेखकों के बारे में बोलते हुए उन्होंने कहा कि लेखक कुछ अपनी और कुछ दुनिया की बातें दर्ज करता है और उसको आने वाली नस्ल के लिए सौंप कर जाता है। यह अलग बात है कि आने वाली नस्ल तक पहुँचते-पहुँचते स्थितियाँ बदल जाती हैं। सभी लेखकों ने मानों अपनी जिंदगी चूल्हे पर रखी है और उसमें उबलती हांडियों पर वे अपने जज़्बातों को पका रहे हैं। उन्होंने सैंतीस भाषाओं में किए जा रहे अपने अनुवाद कार्य का भी ज़िक्र किया, जिसके अंतर्गत उन्होंने इन भाषाओं के कवियों द्वारा 1947 पर लिखी गई कविताओं का अनुवाद किया है और महसूस किया है कि उन सबका स्वर एक ही है और वह है — एक शहर की तलाश या एक नई सुबह का इंतज़ार।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में साहित्य के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि भारतीय साहित्य की परंपरा बहुत ही गौरवशाली है। उन्होंने भारतीय साहित्य की सार्वभौमिकता और उसकी भाषायी विविधता को उसकी ताक़त मानते हुए कहा कि यह परंपरा भूमंडलीकरण के इस समय में भी हमारी ताक़त बनी हुई है।

धन्यवाद ज्ञापन करते हुए अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने पुरस्कृत सभी लेखकों की साहित्यिक सत्ता की बात करते हुए कहा कि वे हमेशा संकटों के ख़िलाफ़ खड़े होते हैं और उनकी रचना-प्रक्रिया किन्हीं भी अवरोधों से खंडित नहीं होगी। कार्यक्रम के आरंभ में औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अकादेमी की उपलब्धियों के बारे में विस्तार से बताया एवं पुरस्कृत लेखकों की प्रशस्ति का पाठ भी किया।

आज के कार्यक्रम

लेखक सम्मिलन (पुरस्कृत लेखक अपने सृजनात्मक अनुभव साझा करेंगे)
रवींद्र भवन परिसर, पूर्वाह्न 10.00 बजे

अखिल भारतीय आदिवासी लेखक सम्मिलन (जारी)
रवींद्र भवन परिसर, पूर्वाह्न 10.00 बजे

नाट्य लेखन का वर्तमान परिदृश्य (परिचर्चा)
रवींद्र भवन परिसर, अपराह्न 2.30 बजे

संवत्सर व्याख्यान (प्रख्यात विचारक एवं भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी द्वारा)
रवींद्र भवन परिसर, सायं 6.00 बजे

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2019
अर्पण समारोह
Sahitya Akademi Awards 2019
Presentation

उत्तर-पूर्व भारत भाषाओं का ख़ज़ाना है—चंद्रशेखर कंबार

साहित्योत्सव के दौरान ‘पूर्वोत्तरी’ कार्यक्रम में देश के उत्तर-पूर्वी और उत्तरी क्षेत्र की भाषाओं के लेखकों ने सहभागिता की। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत वक्तव्य में अकादेमी द्वारा देश के पूर्वोत्तर क्षेत्र में अकादेमी की गतिविधियों को रेखांकित करते हुए कहा कि अकादेमी ने अपनी स्थापना के बाद से अब तक के इतिहास में पहली बार एक वर्ष में सर्वाधिक 715 कार्यक्रम आयोजित किए हैं, जिनमें से 115 कार्यक्रम देश के उत्तर-पूर्व क्षेत्र में ही आयोजित किए गए हैं। अकादेमी ने उत्तर-पूर्व के वाचिक साहित्य को संरक्षित करने का बीड़ा उठा रखा है और कई पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

कार्यक्रम का उद्घाटन भाषण प्रख्यात मणिपुरी कवयित्री अरम्बम मेमचौबी ने दिया। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि पूर्वोत्तर की समृद्ध भाषाओं और साहित्य के बारे में पूरे देश को जानकारी हो सके, इसके लिए सबको मिल कर प्रयास किए जाने चाहिए। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र के साहित्य का अनुवाद अन्य भारतीय भाषाओं में जितना अधिक होगा उतना ही इस क्षेत्र के साहित्य का प्रसार होगा। उन्होंने इस दिशा में साहित्य अकादेमी के प्रयासों की प्रशंसा की और यह आशा व्यक्त की कि अकादेमी उत्तर-पूर्व की भाषाओं और उसके साहित्य को संरक्षित, प्रोत्साहित करने में इसी तरह अपनी सेवाएँ जारी रखेगी। उन्होंने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों द्वारा एक-दूसरे की संस्कृतियों को जानने का मौक़ा मिलता है।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कर रहे साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि उत्तर-पूर्व भारत भाषाओं का ख़ज़ाना है। इन भाषाओं के लोकसाहित्य को बचाना और उन्हें अन्य भारतीय भाषाओं से परिचित कराने के गंभीर प्रयास किए जाने चाहिए। उन्होंने कहा कि इन क्षेत्रों के साहित्यकारों और विद्वानों को इस कार्य के लिए आगे आना चाहिए और इस धरोहर के संरक्षण के उपाय करने चाहिए।

प्रथम सत्र पूर्वाह्न 10.30 बजे आयोजित हुआ जो कहानी-पाठ का था। इस सत्र की अध्यक्षता एन. किरण कुमार ने की। सत्र में रूमी लस्कर बोरा (असमिया), अनिता सिंह (अंग्रेज़ी), नवनीत मिश्र (हिंदी) और हाओबम सत्यवती देवी (मणिपुरी) ने अपनी कहानियों का पाठ किया।

द्वितीय सत्र अपराह्न 12.30 बजे आयोजित हुआ जिसमें ‘तथ्य और आख्यान का अंतर्गुंफन’ विषय पर परिचर्चा हुई। इस सत्र का संयोजन हिंदी कवयित्री, कथाकार और विदुषी अनामिका ने किया। परिचर्चा में कमल चक्रवर्ती (बाङ्ला), गरिमा श्रीवास्तव (हिंदी), निशि पुलुगुर्था (अंग्रेज़ी), मंगत बादल (राजस्थानी) और हरिहर हासदा (संताली) ने सहभागिता की। हरिहर हासदा ने संताली साहित्य के तथ्य और आख्यान पर चर्चा की। इसके बाद निशी पुलुगर्था ने बताया कि वे कहानी लिखने के दौरान कथानक, घटनाओं, संवेदनाओं आदि बातों का विशेष ध्यान रखती हैं। कमल चक्रवर्ती ने कहा कि मैं 1968 से जंगल में घूम रहा हूँ, जहाँ से मुझे लिखने की प्रेरणाएँ मिलती हैं। गरिमा श्रीवास्तव ने कहा कि हर लेखक अपने लेखन का संपादक भी होता है। लेखन आत्म से संवाद की प्रक्रिया है। वह साहित्य ही नहीं जो हमारे मन पर प्रभाव न डाले। मेरे लिए रचनात्मकता स्वयं को उबारने का साधन है। मंगत बादल ने कहा कि संवेदनशील व्यक्ति अपनी संवेदनशील भावों के माध्यम से घटनाओं को अभिव्यक्त करता है और जब तक उसे व्यक्त नहीं करता तब तक वह स्वयं उस पीड़ा को भोगता है। जब तथ्यों और कथानक का सही प्रकार से अंतर्गुंफन होता है तब ही उसे एक सफल रचना कहा जा सकता है। सत्र की संयोजक अनामिका ने सत्र के संवादियों द्वारा प्रस्तुत विचारों पर अपनी टिप्पणी प्रस्तुत की।

लेखक सम्मिलन
hern Writers' Meet
25 फ़रवरी 2020

तृतीय सत्र कविता-पाठ का था, जो अपराह्न 2.30 बजे आयोजित हुआ। इस सत्र की अध्यक्षता करबी डेका हाज़रिका ने की तथा इस सत्र में पिकूमणि दत्त (असमिया), चंद्रमणि झा (मैथिली), रश्मि चौधुरी (बोडो), गोपाल कृष्ण कोमल (डोगरी), जयदीप षडंगी (अंग्रेज़ी), मृत्युंजय सिंह (हिंदी), मंसूर बनिहाली (कश्मीरी), अब्दुल हमीद (मणिपुरी), बरजिंदर चौहान (पंजाबी), आलोक कुमार मिश्र (संस्कृत) और शारिक़ कैफ़ी (उर्दू) ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं। अकादेमी के मुंबई कार्यालय के क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किंबहुने ने कार्यक्रम का संचालन किया और उनके धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

पूर्वोत्तरी
उत्तर-पूर्वी एवं उत्तर क्षेत्रीय लेखक सम्मिलन
Purvottari
North-Eastern & Northern Writers' Meet
25 फ़रवरी 2020

पूर्वोत्तरी
उत्तर-पूर्वी एवं उत्तर क्षेत्रीय लेखक सम्मि
Purvottari
North-Eastern & Northern Write
25 फ़रवरी

आदिवासी भाषाओं के संरक्षण पर विमर्श और कविता पाठ

अखिल भारतीय आदिवासी लेखक सम्मिलन
All India Tribal Writers' Conference
24-26 फ़रवरी 2020

अखिल भारतीय आदिवासी लेखक सम्मिलन
All India Tribal Writers' Conference
24-26 फ़रवरी 2020

25 फ़रवरी 2020 को अखिल भारतीय आदिवासी लेखक सम्मिलन के दूसरे दिन 'आदिवासी भाषाएँ : संरक्षण और पुनरुद्धार' विषय पर विचार सत्र आयोजित हुआ। सत्र की अध्यक्षता आद्दंड सी. करिअप्पा ने की, जिसमें आदिवासी साहित्यकारों ने आदिवासियों की लुप्त होती हुई भाषाओं पर गंभीर चिंता करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। गंगा सहाय मीणा ने आदिवासी भाषाओं के लुप्त होने की समस्या का समाधान प्रस्तुत करते हुए अपने लेख में विस्थापन को भाषा के लिए बहुत बड़ा ख़तरा बताया। उन्होंने कहा कि विस्थापन के साथ ही व्यक्ति की भाषा भी विस्थापित हो जाती है इसके साथ-साथ पीढ़ी-दर-पीढ़ी भाषायी संचार की कमी, मातृभाषा वाचकों की संख्या की कमी एवं विलुप्त भाषा की भाषा सामग्री की कमी से आदिवासी भाषाओं के लुप्त होने का ख़तरा बढ़ रहा है। और इन्हीं पर ध्यान देने से भाषा संरक्षण में सहायता मिल सकती है। कई आदिवासी भाषाएँ मौखिक रूप से प्रयोग की जाती हैं, यदि इन भाषाओं की लिपि, दस्तावेज़, वर्णमाला आदि बनाए जाएँ तो ये सरंक्षित हो सकती हैं। बच्चों को उनकी प्राथमिक शिक्षा उनकी मातृभाषा में देने से भी भाषा संरक्षण में सहायता मिल सकती है। गंगा सहाय मीणा के अतिरिक्त इस सत्र में चुकी भूटिया, श्रीकृष्ण जी. काकडे, एस. नागमल्लेश्वर राव ने क्रमशः पूर्वोत्तर, मध्य एवं दक्षिण भारत की आदिवासी भाषाओं के संदर्भ में अपने सुचिंतित आलेख प्रस्तुत किए।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता मंगला गरवाल (भील) तथा चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता अनुज मोहन प्रधान (कुई) ने की। इन दोनों सत्रों में अंजली बेळगल (हक्की पिक्की), रामगोपाल रामलाल भिलावेकर (कोरकु), दाहुन-ई मोन-ई खार्सिण्टियू (खासी), वी.आर. राल्ते (मिज़ो), सुरेश हुसेनराव वेलाडे (गोंड), सिमिओन रोंग्लो (खोइबु), शेफाली देववर्मा (ककबरक), इवनिशा पाठाव (जयंतिया), एल. सोलोमन डाङसवा (मारिङ) और शनोई मोज़ेस तराव (तराव) ने अपनी कविताएँ सुनाईं। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने किया।

अखिल भारतीय आदिवासी लेखक सम्मिलन
All India Tribal Writers' Conference
24-26 फ़रवरी 2020

साहित्य संवेदी सत्याग्रह है–नंदकिशोर आचार्य

पुरस्कार विजेताओं से मीडिया की बातचीत
Media Interaction with the Awardees
25 फ़रवरी 2020

साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेताओं से मीडिया की बातचीत का आयोजन पूर्वाह्न 11.00 बजे रवींद्र भवन परिसर में किया गया। मीडिया और साहित्य प्रेमियों से मुख़ातिब थे - जयश्री गोस्वामी महंत (असमिया), चिन्मय गुहा (बाङ्ला), फुकन च. बसुमतारी (बोडो), रतिलाल बोरीसागर (गुजराती), नंदकिशोर आचार्य (हिंदी), विजया (कन्नड), अब्दुल अहद हाजिनी (कश्मीरी), निलबा अ. खांडेकर (कोंकणी), कुमार मनीष अरविंद (मैथिली), वि. मधुसूदनन् नायर (मलयाळम्), बेरिल थांगा (मणिपुरी), अनुराधा पाटील (मराठी), सलोन कार्थक (नेपाली), तरुणकांति मिश्र (ओड़िआ), किरपाल कज़ाक (पंजाबी), रामस्वरूप किसान (राजस्थानी), पेन्ना मधुसूदन (संस्कृत), कालीचरण हेम्ब्रम (संताली), ईश्वर मूरजाणी (सिंधी), चो. धर्मन (तमिऴ) एवं शाफ़े क़िदवई (उर्दू)।

पुरस्कृत लेखकों ने उपस्थित मीडियाकर्मियों, लेखकों एवं श्रोताओं के विभिन्न सवालों के जवाब दिए। भाषा की भूमिका, समाज की समस्याओं से निपटने के लिए साहित्य की क्षमता और शक्ति, वैश्विक चिंताओं और परिस्थितियों का साहित्य में निरूपण से जुड़े सवालों के सुचिंतित जवाब दिए गए। नंदकिशोर आचार्य ने कहा कि साहित्य एक प्रकार से संवेदी सत्याग्रह है। उन्होंने महान लेखक और अच्छे लेखक के अंतर को स्पष्ट करते हुए कहा कि महान लेखकों की रचनाएँ हमेशा समाज को प्रभावित करती हैं जबकि अच्छे लेखकों की रचनाएँ साहित्य के मापदंडों के अनुसार होती हैं, यह अलग बात है कि उनकी रचनाओं में भी समाज की स्थितियों का निरूपण मिलता है। रतिलाल बोरीसागर ने कहा कि उनकी सभी रचनाएँ उनके अपने अनुभवों पर आधारित हैं और वे गंभीर बातों को व्यक्त करने के लिए बस उनमें हास्य और व्यंग्य का पुट डाल देते हैं।

चिन्मय गुहा ने विश्व साहित्य और कला के विस्तृत परिदृश्य में बाङ्ला साहित्य और कला को रेखांकित किया और कहा कि आधुनिक मीडिया के दौर में हमें अतीत से सबक़ लेकर स्थितियों का जायज़ा लेना चाहिए। अनुराधा पाटील ने कहा कि क्षेत्रीय भाषाओं को संरक्षित और समृद्ध करने के लिए लेखकों को अपनी मूल भाषा में लिखना बहुत ज़रूरी है। शाफ़े क़िदवई ने सर सैयद अहमद ख़ान के व्यक्तित्व और कृतित्व के कई पहलुओं को उजागर करते हुए बताया कि सर सैयद ने आधुनिकता को समाज के उत्थान के नज़रिये से प्रस्तुत किया था। उन्होंने कहा कि साहित्य में बने बनाए ढाँचे को ध्वस्त किए बिना महान साहित्य की रचना नहीं की जा सकती। कार्यक्रम का संयोजन मीडियाकर्मी अमरनाथ अमर ने किया तथा अकादेमी के बेंगळूरु कार्यालय के क्षेत्रीय सचिव एस.पी. महालिंगेश्वर और अकादेमी में संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

साहित्योत्सव 2020 के कार्यक्रम

दिनांक	समय	कार्यक्रम	स्थान
27 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.00 बजे	आमने–सामने : कुछ पुरस्कृत लेखकों के साथ संवाद	रवींद्र भवन परिसर
27 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.30 बजे	प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य (राष्ट्रीय संगोष्ठी)	साहित्य अकादेमी सभागार
27 फ़रवरी 2020	अपराह्न 2.00 बजे	अखिल भारतीय एलजीबीटीक्यू कवि सम्मिलन	रवींद्र भवन परिसर
27 फ़रवरी 2020	सायं 6.00 बजे	सांस्कृतिक कार्यक्रम : भारतीय वाद्य यंत्रों की समेकित प्रस्तुति	रवींद्र भवन परिसर
28 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.00 बजे	प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य (राष्ट्रीय संगोष्ठी) (जारी)	साहित्य अकादेमी सभागार
28 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.30 बजे	अनुवाद कला : सांस्कृतिक दायित्व (परिचर्चा)	रवींद्र भवन परिसर
28 फ़रवरी 2020	अपराह्न 2.30 बजे	मीडिया और साहित्य : सूचना एवं संवेदना (परिचर्चा)	रवींद्र भवन परिसर
28 फ़रवरी 2020	सायं 6.00 बजे	महमूद फ़ारूक़ी द्वारा दास्तानगोई	रवींद्र भवन परिसर
29 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.00 बजे	प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य (राष्ट्रीय संगोष्ठी) (जारी)	साहित्य अकादेमी सभागार
29 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.00 बजे	आओ कहानी बुनें : बाल गतिविधियाँ	रवींद्र भवन परिसर
29 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.00 बजे	भारत में प्रकाशन की स्थिति (परिचर्चा)	रवींद्र भवन परिसर
29 फ़रवरी 2020	पूर्वाह्न 10.30 बजे	नई फ़सल (अखिल भारतीय युवा लेखक सम्मिलन)	रवींद्र भवन परिसर